नाटक के बारे में

'विरासत' विदर्भ, महाराष्ट्र के एक ब्राह्मण परिवार की कहानी है जो बदलती सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों के कारण सामंतवाद और अभिजात वर्ग की गिरावट को दर्शाता है। एक ब्राह्मणवादी परिवार जो आज भी अपने पुराने मूल्यों से बंधा हुआ है जिस कारण उस परिवार का हर व्यक्ति ख़ुद से लड़ रहा है और इस इन्तज़ार में है कि कोई दूसरा उसको सहारा दे। परिवार की डोर व्यंकटेश की मृत्यु के बाद सदस्यों के आपसी संघर्षों और रिश्तों के उतार चढ़ाव नाटक को और भी गहराई देते हैं।

निर्देशकीय

भारतेन्दु नाट्य अकादमी में छात्रों के संग नाटक करने का बुलावा आया तो बाईस साल पहले की स्मृतियों ने घेर लिया, जब मैं लखनऊ आयी थी छात्रों के संग 'होली' नाटक करने। वह स्मृतियाँ सुखद थीं इसलिए मैंने तुरंत यह निमंत्रण स्वीकार कर लिया।

इस बार भी इस पूरी प्रक्रिया में छात्रों की भागीदारी, सीखने की तीव्र इच्छा और मेहनत से बहुत ही खुशी हुई। संयोगवश फिर एक बार नाटक का चुनाव करते वक़्त महेश एलकुंचवार का ही नाटक उपयुक्त लगा। विरासत करने का निर्णय इसीलिए लिया था क्योंकि इसमें रिश्तों और अर्थ को खोजने की अंतहीन संभावनाएं हैं। छात्रों के लिए ये एक पिटारे की तरह है जिसमें जितना ढूँढ़ो उतना ही खज़ाना मिलता जाए। मेरी राय में तो 'विरासत' आधुनिक भारतीय रंगमंच का सबसे महत्वपूर्ण नाटक है। यह बदलते भारत का एक जीवंत दस्तावेज़ तो है ही साथ ही इसका परिवेश, स्तिथियाँ और पात्र आम ज़िन्दगी के होने के बावज़ूद ऐसे हैं जिनमें अर्थ की बहुत सी परतें छिपी हैं। पूरे नाटक का माहौल बड़ा काव्यात्मक है जहां शब्द कम, ख़ामोशी और बिम्ब ज़्यादा बोलते हैं।

इस नाटक को तैयार करने की पूरी प्रक्रिया बहुत ही रोचक रही। इम्प्रोवाइज़ेशन के ज़रिए, छात्र मिलजुल कर,टुकड़े टुकड़े में दृश्यों की रूपरेखा तैयार करते और फिर उसी को कांट छांट कर हम उसे धीरे धीरे पक्का करतेरहे। इसी तरह हम सभी ने नाटक की स्तिथियों और पात्रों को कई कई बार, कई कई नज़रियों से जिया और देखा। उसमें मेरा काम तो सिर्फ सलाह देने का था। नाटक का खाका तो पूरा छात्रों ने ही तैयार किया और इसके लिए इन सबने रात रात भर जाग कर बेहद मेहनत तो की ही, साथ ही जो तैयार किया उसमें रोज़ नए विचार और रचनात्मकता का भरपूर परिचय दिया।

हमारी पूरी कोशिश रही कि इस एक महीने में रंग भाषा की कुछ बारीकियों को सीखें और नाट्य रचना को तैयार करने का अनुभव मिले। प्रदर्शन चाहे जैसा भी हो, अगर छात्रों ने इस दौरान कुछ ऐसा सीखा हो जो उनके आगे के नाट्य जीवन में उनके काम आए तो मुझे लगेगा कि यह प्रयास सार्थक हुआ। मैं भारतेन्दु नाट्य अकादमी का आभार मानती हूं कि मुझे यहां के छात्रों के साथ नाटक करने का मौक़ा दिया और हर काम में पूरा सहयोग दिया। भा. न. अ. के सभी अन्य सहयोगियों जिन्होंने इतना मन लगाकर काम किया और इस प्रदर्शन को सफल बनाया। सबसे अधिक अपने युवा सहयोगी श्याम सहनी का जिन्होंने इस पूरी प्रक्रिया के हर पहलू में सहयोग तो दिया ही, साथ ही सभी तकनीकी पक्षोंको पूरी तरह संभाला। आशा है आप छात्रों के इस प्रयास को पसंद करेंगे।